

# समीक्षा-आधी दुनिया का सच-कुमुद शर्मा

डॉ. सरोज कुमारी

सहा. प्रोफेसर, विवेकानन्द महाविद्यालय  
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

## सारांशिका

कामकाजी महिलाओं का बहु आयामी संघर्ष। इस अध्याय में लेखिका ने कामकाजी स्त्रियाँ वेफ जीवन से जुड़ी विभिन्न समस्याओं और चुनौतियों को दृष्टिगत रखते हुए उन वेफ जीवन संघर्ष वेफ का विविध पहलुओं की सच्ची पड़ताल की है। लेखिका की पैनी दृष्टि और छरहरी भाषा शैली उन वेफ विचारों को स्पष्ट करने में खासी सहायक सिद्ध हुई है। कुमुद शर्मा ने नारी शिक्षा की चुनौतियों की चर्चा करते हुए लिखा है—सांस्कृतिक प्रतिबंध और पारम्परिक वर्जनाएँ किस तरह लड़कियों की शिक्षा वेफ मार्ग का रोड़ा बनती हैं, यह बात ग्रामीण या कस्बाई इलाकों या छोटे शहरों में ही नहीं, बल्कि बड़े शहरों में भी देखी जा सकती है। बालक-बालिकाओं की शिक्षा वेफ प्रति असमानता का व्यवहार प्रायः समाज वेफ हर वर्ग में देखा जा सकता है। इस प्रकार की दर्दनाक स्थिति से गुजरना ग्रामीण समाज की महिलाएँ वेफ लिए आम बात है। पुस्तक का यह अध्याय इन महिलाओं की शारीरिक, मानसिक और सामाजिक प्रताड़ना का खुला चित्रण पाठकों वेफ समक्ष रखता है और उन्हें यह सोचने पर मजबूर कर देता है कि क्या यह महिलाएँ समाज की प्रगति में सहायक नहीं हो सकती, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार पर पुरुषों वेफ समान इनका हक नहीं बनता। लेखिका का उद्देश्य ग्रामीण समाज की सोच में बदलाव लाने को है जिससे इन महिलाओं को भी सामान्य जीवन जीने का हक मिल सके।

**मुख्य शब्द:** समीक्षा, दुनियाँ, सच, स्वतंत्र, चिन्तन

‘आधी दुनिया का सच’ स्त्री जीवन वेफ अनेकानेक पहलुओं की गहरी पड़ताल करती एक ऐसी पुस्तक है जो स्त्री-समाज वेफ कट सत्य को बड़ी बेबाकी से सामने रखती है। लेखिका प्रो. कुमुद शर्मा ने इस पुस्तक में स्त्री-जीवन वेफ लगभग प्रत्येक वर्ग की समस्याओं और चुनौतियों पर अपने स्वतन्त्रता से विचार व्यक्त किए हैं। उन्होंने आँखों देखी विभिन्न घटनाओं और समाचार पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित स्त्री जीवन से सम्बन्धित सामग्री वेफ आधार पर वास्तव में आधि दुनिया वेफ पूरे सच से पर्दा उठाने की साहसिक पहल की है।

लेखिका का स्वतन्त्र चिन्तन और स्त्री समाज वेफ प्रति गहरी सहानुभूति पुस्तक की भूमिका से ही स्पष्ट हो जाती है—स्त्रियों की पराधीनता और उस वेफ अस्तित्व की लड़ाई का संघर्ष बहुत आसान नहीं है इसीलिए उस वेफ जीवन में उभरने वाली समस्याएँ, आने वाली बाधाएँ और तनाव सीधे-सपाट नहीं हैं ... उसकी समस्याएँ, तकलीपेंफ, और संघर्ष बहु आयामी हैं। उन्होंने इस पुस्तक वेफ लगभग प्रत्येक अध्याय में स्त्री वेफ बहु आयामी संघर्ष को सम्बद्ध किया है।

पुस्तक का प्रथम अध्याय ‘हिंसा की वेदी पर महिलाएँ’ स्त्री जीवन वेफ शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और सामाजिक उत्पीड़न की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करता है। अमीर-गरीब, कामकाजी-घरेलू, शहरी-ग्रामीण प्रत्येक वर्ग की स्त्रियों वेफ साथ होने वाली हिंसा का विस्तृत ब्यौरा दिया है। अपनी बात वेफ समर्थन में उन्होंने विभिन्न समाचार-पत्रों, नेशनल क्राईम रिपोर्ट ब्यूरो, राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य, मन्त्रालय सन्दर्भित सर्वेक्षण की रिपोर्ट वेफ आधार पर ठोस आँकड़े भी प्रस्तुत किए हैं। उन्होंने समाज वेफ उस वर्ग का कच्चा-चिड्डा खोलने का साहस किया है जो स्त्री वेफ साथ पशुवत व्यवहार करता है। इस दृष्टि से लेखिका का बेबाक लेखन प्रशंसनीय ही नहीं, महिलाओं को इस तरह की हिंसक वारदातों वेफ प्रति सचेत रहने की प्रेरणा भी देता है।

पुस्तक वेफ एक अन्य अध्याय में लेखिका ने भ्रूण हत्या वेफ खिलाफ आवाज उठायी है और इस तथ्य पर खासा जोर दिया है कि भ्रूण हत्या वेफ लिए स्त्री-पुरुष दोनों समान रूप से दोषी हैं। उन्होंने भ्रूण हत्या वेफ बढ़ते ग्राफ को देखकर स्त्री-पुरुष अनुपात वेफ गड़बड़ाने वेफ प्रति गहरी चिन्ता व्यक्त की है। यही नहीं भ्रूण हत्या वेफ कारण स्त्रियों की संख्या में आयी कमी एक बड़े अपराध जगत को जन्म दे रही है। लेखिका ने इस सम्बन्ध में विभिन्न राज्यों में होने वाली स्त्री खरीद फरोख्त वेफ ताजा आँकड़े प्रस्तुत किए हैं। पुस्तक का बेहद महत्वपूर्ण अध्याय है—‘कामकाजी महिलाओं का बहु आयामी संघर्ष’। इस अध्याय में लेखिका ने कामकाजी स्त्रियाँ वेफ जीवन से जुड़ी विभिन्न समस्याओं और चुनौतियों को दृष्टिगत रखते हुए उन वेफ जीवन संघर्ष वेफ का विविध पहलुओं की सच्ची पड़ताल की है। लेखिका की पैनी दृष्टि और छरहरी भाषा शैली उन वेफ विचारों को स्पष्ट करने में खासी सहायक सिद्ध हुई है। कुमुद शर्मा ने नारी शिक्षा की चुनौतियों की चर्चा करते हुए लिखा है—सांस्कृतिक प्रतिबंध और पारम्परिक वर्जनाएँ किस तरह लड़कियों की शिक्षा वेफ मार्ग का रोड़ा बनती हैं, यह बात ग्रामीण या कस्बाई इलाकों या छोटे शहरों में ही नहीं, बल्कि बड़े शहरों में भी देखी जा सकती है। बालक-बालिकाओं की शिक्षा वेफ प्रति असमानता का व्यवहार प्रायः समाज वेफ हर वर्ग में देखा जा सकता है। मुख्य रूप से विवाह वेफ बाद बालिकाओं की शिक्षा अधूरी रह जाती है और घर गृहस्थी में उनकी शतप्रतिशत भागीदारी निश्चित कर दी जाती है जिससे उनका कैरियर वहीं समाप्त हो जाता है और वे पारिवारिक जिम्मेदारियों में बुरी तरह उलझ जाती हैं, कभी-कभी विशेष प्रतिभा सम्पन्न स्त्रियों को भी इसी परम्परा का शिकार होना पड़ता है। लेखिका ने इन विषयों पर करारा प्रहार किया है। यह भी बताया है कि स्त्रियों की स्थिति सुधरे बिना किसी भी क्षेत्र का विकास सम्भव नहीं है।

‘पहरे में हैं ग्रामीण स्त्रियाँ’ नामक अध्याय में लेखिका की



दृष्टि सिर्फ शहरी और कामकाजी महिलाओं की तरफ ही नहीं अपितु ग्रामीण स्त्रियों की विभिन्न समस्याओं की ओर भी गई है। उन्होंने लिखा है—ये महिलाएँ घर की चौखट वेफ बाहर की दुनिया वेफ रंग—ढंग नहीं जानती। बाहर जाने पर उन वेफ घर वेफ पुरुषों की इज्जत जाती है, उन वेफ अहंकार को चुनौती मिलती है जिसकी अन्तिम और दर्दनाक परिणति होती है—औरत की पिटाई, घूँघट, परदे और मान—मर्यादा जैसे हथकंडे उन्हें सार्वजनिक जीवन से काटकर रख देते हैं। इस प्रकार की दर्दनाक स्थिति से गुजरना ग्रामीण समाज की महिलाएँ वेफ लिए आम बात है। पुस्तक का यह अध्याय इन महिलाओं की शारीरिक, मानसिक और सामाजिक प्रताड़ना का खुला चित्रण पाठकों वेफ समक्ष रखता है और उन्हें यह सोचने पर मजबूर कर देता है कि क्या यह महिलाएँ समाज की प्रगति में सहायक नहीं हो सकती, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार पर पुरुषों वेफ समान इनका हक नहीं बनता। लेखिका का उद्देश्य ग्रामीण समाज की सोच में बदलाव लाने को है जिससे इन महिलाओं को भी सामान्य जीवन जीने का हक मिल सके।

पुस्तक का एक—एक अध्याय स्त्रियों वेफ उत्पीड़न और गुलामी की कहानी कहता है और उन सरकारी योजनाओं और कानूनों पर प्रश्न चिन्ह लगाता है जिनवेफ आधार पर स्त्री समाज को उसका मुकम्मल हक आज तक नहीं मिल पाया। फिर इन सरकारी योजनाओं और कानूनों का क्या मतलब। स्त्री का संघर्ष आज भी जारी है। परिवार—समाज की बेड़ियाँ उसे आज भी जकड़े हुए हैं, शारीरिक, मानसिक प्रताड़ना से वह आज भी त्रस्त है, ऐसे में आवश्यकता है समाज को अपनी सोच बदलने की स्त्री सशक्तीकरण सिर्फ सम्मेलनों, विचार—गोष्ठियों, सभाओं का हिस्सा भर बनकर न रहे, अपितु सरकारी और गैर सरकारी, सामाजिक और कानूनी स्तर पर इस ओर ठोस कदम उठाए जाने चाहिए। यह पुस्तक ऐसे कई समाधान प्रस्तुत करती है जिनवेफ आधार पर स्त्रियों की मौजूदा स्थिति में सुधार होना अति आवश्यक है। लेखिका प्रो. कुमुद शर्मा का यह प्रयास सराहनीय ही नहीं, प्रशंसनीय भी है।